नई उपलब्धि 64 टेलीस्कोप बनाकर देश में एस्ट्रोनॉमी फिजिक्स में रिसर्च का सबसे बड़ा केंद्र बनेगा, गैलेक्सी पर शहर में ही हो सकेगी स्टडी

आईआईटी बना रहा आधुनिक रेडियो टेलीस्कोप डिश

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) इंदौर ने आधुनिक इंटरनेशनल रिसर्च के लिए रेडियो टेलीस्कोप डिश का काम तेज कर दिया है। यह डिश जल्द बनकर तैयार हो जाएगी। आईआईटी इंदौर देश का पहला ऐसा संस्थान होगा जो 64 रेडियो टेलीस्कोप बनाएगा। आईआईटी अपना यह टारगेट लगभग 10 चरणों में पूरा करेगा।

आईआईटी इंदौर के डायरेक्टर ने इस पूरे प्लान का जिक्र हाल ही में हुए दीक्षांत समारोह की रिपोर्ट में भी किया है। इस प्रोजेक्ट के पूरा हो जाने के बाद आईआईटी इंदौर पूरे देश में एस्ट्रोनॉमी फिजिक्स में रिसर्च का सबसे बड़ा सेंटर बन जाएगा। यहां गैलेक्सी पर तमाम स्टडी हो सकेंगी। इसी चरण में आईआईटी इंदौर तीसरे रेडियो टेलीस्कोप डिश पर भी काम शुरू करेगा। फिर अलग-अलग चरणों में इनकी संख्या बढ़ती जाएगी। हालांकि इससे पहले 2013 में आईआईटी इंदौर एक टेलीस्कोप बना चुका है। उसके जरिए रिसर्च भी चल रही है। इस पर आईआईटी 920 मिलियन डॉलर खर्च करेगा।

यूजी स्टूडेंट की टीम जुटी फैकल्टी के साथ : रेडियो टेलीस्कोप डिश के इस आधुनिक प्रोजेक्ट को तैयार करने में आईआईटी के अंडर ग्रेजुएट स्टूडेंट की टीम फैकल्टी के साथ जुटी है। हर दिन कई घंटे इस पर काम किया जा रहा है। इतना ही नहीं पहला टेलीस्कोप भी स्टूडेंट ने प्रबंधन और फैकल्टी के साथ मिलकर तैयार किया था।

2009 में शुरू हुआ है आईआईटी इंदौर

आईआईटी इंदौर 2009 में किराए के भवन से शुरू हुआ था, लेकिन अब आईआईटी का खुद का आधुनिक भवन तैयार हो रहा है। सिमरोल में बन रहे इस कैम्पस के एक बड़े हिस्से में ग्रीनरी होगी। साथ ही आधुनिक प्रशासनिक संकुल, लाइब्रेरी और लैब के अलावा आधुनिक स्मार्ट क्लास रूम इसकी सबसे बड़ी खासियत होंगे। फिलहाल आईआईटी इंदौर में तीन ब्रांच हैं, भविष्य में इसकी संख्या दोगुना तक होने की संभावना है।

आईआईटी के नए कैम्पस में बनेगी हाईटेक नर्सरी

वन विभाग ने तैयार की योजना, हर साल एक लाख नए पौधे तैयार किए जाएंगे

इंदौर | सिमरोल में आकार ले रहे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) के परिसर में वन विभाग प्रदेश की सबसे बेहतरीन नर्सरी बनाने जा रहा है। ऐसी नर्सरी स्थापित की जाएगी, जिसमें हर साल करीब एक लाख पौधे तैयार किए जाएंगे। दरअसल, आईआईटी को 510 एकड़ जमीन देने के साथ ही केंद्र सरकार ने यह शर्त डाल दी थी कि कैम्पस को हरा-भरा रखने के लिए वन विभाग का दखल इस जमीन पर रहेगा। आईआईटी प्रबंधन एक मॉडल नर्सरी विभाग के जरिए परिसर में बनवाएगा। कृत्रिम बादल के जरिए पौधों की सिंचाई होगी।

बादलों से होगी सिंचाई : सक्सेना के मुताबिक क्यारियों के ऊपर सिंचाई के लिए फॉगर मशीन (बादलों के जैसा कृत्रिम आवरण) लगाई जाएगी। यह जमीन से करीब सात फीट ऊपर लगाई जाएगी।

- मानवीय दखल केवल इतना होगा कि थैलियों में मिट्टी भरने और बीज रखे जाएंगे। इसके बाद उसे बड़ा करना, सिंचाई, कीटनाशक छिड़काव मशीनों से ही होगा।
- पौधे एक ही समय में उमस, बारिश और धूप के वातावरण में जल्दी पनपते हैं। इसके लिए ऐसे पॉली हाउस बनाए जाएंगे जिनमें एक बार में पांच हजार से ज्यादा पौधे रखे जा सकेंगे।

Dainik Bhaskar (Indore), 31st August 2015, Page-2